पावागढ़ सु उत्तरी कालका संग भेरू ने लाइ रे

पावागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे,
आगे आगे कालो खेले,
पाछे भेरू गोरो हे ओ जी।lbd।

ऐ हे खड़क खांडो खप्पर हाते,
हुई विकराल काली हे,
योगी भूत पिचासन नाचे,
हे तीन लोक की माई हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।lbd।

ऐ हे तीन लोक और चौदह भवन में,
माता थारो राज हे,
देवी देवता सरणे आया,
शंकर शीश नमाया हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।lbd।

ऐ हे ढोल नंगाड़ा नोपत बाज्या,
तीनो देव थारे नाच्या हे,
भगता रे बेले आवो ऐ कालका,
अब देरी ना लगावो हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।lbd।

ऐ हे धरम भगत थारी महिमा गावे,
चरना शीश नमावे हे,
जो कोई चरना आवे मात रे,
जनम सफल हो जावे हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।lbd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

पावागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे,
आगे आगे कालो खेले,
पाछे भेरू गोरो हे ओ जी।bd।

गायक और लेखक – धर्मेंद्र तंवर उदयपुर।
mobile no 9829202569

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com